ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-4*September 2015

कबीर एवं गुरूनानक की मत भिन्नता

ममता सहगल
सहायक प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
श्री गुरूनानक महिला महाविद्यालय,
जबलपुर

सारांश

मध्यकाल के प्रमुख संत कबीर तथा नानक असाधारण, सरल एवं दिव्य व्यक्तित्व के थे। दोनों हो सच्चे अर्थों में धर्म गुरू थे। इसलिये उनकी वाणियों का आध्यात्मिक रस ही आस्वाध होना चाहिये। परन्तु हमने विभिन्न रूप में उनकी वाणी का अध्ययन किया। समाज सुधारक के रूप में, अद्भुत साहसी के रूप में, क्रांतिकारी रूप में एवं विशेष सम्प्रदाय के प्रतिष्ठाता के रूप में। वस्तुतः वे व्यक्तिगत साधना के प्रचारक थे।

मुख्य शब्द : भक्तिकाल, संतो की विचारधारा।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल के मध्यकाल को स्वर्णयुग अथवा स्वर्ण काल भी कहा जाता है। भक्तिकाल की प्रारंभिक व्यवस्था को अत्यधिक प्रभावित करने वाले संतों में कबीर और गुरूनानक का प्रमुख स्थान है। इन्होंने व्यक्ति साधना के साथ ही सामाजिक चिंतन को भी अत्यधिक प्रभावित किया है। इन संतों ने पंडितों, मौलवियों तथा राजदरबारों के आदेशों की परवाह न करते हुये जन–जीवन को आत्म चेतना के बल पर एक नये विश्वास का संचार किया था। इन्होंने पूँजीवादी पक्ष की भी भर्त्सना की थी। दोनों ही संतों ने मानव समाज में जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद की कटू आलोचना करते हुये परस्पर प्रेम एवं सौहार्द स्थापित करने का अथक प्रयत्न किया था तथा मानव समाज का पथ प्रदर्शन कर उन्हे आपसी प्रेम एवं भाईचारें के साथ रहने के लिये प्रेरित किया।

कबीर एवं गुरूनानक में विचारों की समानता के साथ–साथ मत भिन्नता भी मिलती है। दोनों ही संत परंपरा की अन्यतम विभूतियाँ हैं, परंतु दोनों ही मध्यकालीन संतो में कितना महान अंत है– कबीर का स्वभाव अत्यत तेजस्वी और उग्र है, नानक का शांत और मृदु। कबीर बार–बार व्यंग्य का प्रयोग करते हैं जबकि नानक प्रेम की सहज वाणी के माध्यम से ही अपना मन्तव्य व्यक्त करते हैं। कबीर को ज्ञान का बल है, नानक को केवल भक्ति का संबल प्राप्त है। इसलिये कबीर तर्क का आश्रय लेते हैं जबकि नानक का माध्यम, केवल अनुभव है। कबीर का मार्ग आदेश और उपदेश का मार्ग हैं, परंतु नानक आत्मीय भाव से परामर्श देते है। परिणामतः कबीर का प्रभाव जहां अधिक प्रखर और तीव्र था, वहाँ नानक प्रभाव अधिक व्यापक और स्थाई सिद्ध हुआ। दोनो संतो की मत भिन्नता का मूल्यांकन निम्न रूपों में किया जा सकता है।

वर्ग भेद का प्रभाव तथा शिक्षा का प्रभाव

नानक जी जाति से खत्री थे। यह एक सम्मानित जाति थी। उनके परिवार को आदर्श परिवार माना जाता था। इसके विपरीत कबीर की जुलाहा थे जिनकी जाति निम्न थी तथा परिवार दीन–हीन था। इस कारण से उनका बचपन अभावों में व्यतीत हुआ। यही कारण था जिससे कबीर को शिक्षा से भी वंचित रहना पड़ा। परंतु नानक जी पाठशाला गए। अपनी कार्यक्षमता, उत्तरदायित्व से उन्होंने गुरू से अल्पकाल में ही सारी विधाएं प्राप्त कर ली थी। एक दिन उन्होंने वर्णमाला के सभी अक्षरों (अ, आ, ... क, ख) के आध्यात्मिक अर्थो को प्रकट कर अपने गुरू (पांधा जी) को आष्चर्य चकित कर दिया था। यह वर्णन आसा राग में संग्रहीत है। गुरूनानक ने पं. ब्रजनाथ से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने अपनी विलक्षण बुद्धि के कारण सबको आश्चर्य में डाल दिया। नानक ने फारसी का ज्ञान मुल्ला जी से प्राप्त किया। अपने गुरू मुल्ला साहब को परमात्मा की भक्ति की शिक्षा दी एवं उनके पास जाना छोड़ दिया।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि नानक जी को पंजाबी संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान था। उन्होंने अपने जीवन म अनेक सम्पदाय के पंडितों, दार्शनिका, विद्वानों, मुल्लाओं से भी शास्त्रार्थ किया। नानक जी आलौकिक प्रतिभाशाली, तर्कशक्ति के धनी थे।

भाषा की तीक्षणता–क्रांतिकारी कबीर तथा शांतिप्रिय नानक

नानक जी की जीवनी का अध्ययन करने से यह बात हमारे सामने आती है कि नानक जी का स्वभाव मृदु, कोमल, सरस था। उनकी वाणी में कोमलता तथा सरलता झलकती थी। नानक जी दयालु प्रकृति के थे।

नानक जी की दयालुता का कारण समझे तो हम यह कह सकते हैं कि नानक जिस कुल में जन्म लिये थे वह सामाजिक तथा आर्थिक दोनों ही दृष्टि से उच्च तथा सम्माननीय समझा जाता था। यही कारण था कि नानक जी को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उन परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ा जो कबीर को करना पड़ा। कबीर का क्रांतिकारी रूख होने का सबसे बड़ा कारण यह था कि कबीर जुलाहा थे तथा उन्हें निम्न जाति का समझा जाता था। दोनों संतो के आगमन के समय जाति–पाति का बोलबाला था। वर्ग भेद के विभाजन के कारण निम्न श्रेणी के लोगों को उस समय की विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उनकी आर्थिक स्थिति डॉवाडोल थी तथा आसपास का दूषित वातावरण उनके जोवन में आक्रोष पैदा करता है। तभी तो उन्होंने जो जीवन अपनी आंखों से देखा तथा भोगा उस पर उन्होंने सीधा तीखा प्रहार किया है। समाज में व्याप्त कुरितियों, आडंबर, मिथ्याचार, पापाचर देखकर उनका हृदय दहल उठा तथा उनका क्रोध अंगार की भाँति फूट पड़ा इसके परिणाम स्वरूप कबीर का क्रांतिकारी स्वरूप हमारे समक्ष दृष्टिगोचर होता है। उन्हें उपेक्षा एवं अपमान सहना पड़ा। कबीर रामानंद को अपना गुरू बनाना चाहते थे पर उन्होंने भी कबीर (निम्न श्रेणी के कारण) को तिरष्कृत किया। शायद यही कारण था कि कबीर की वाणी में तीखी उक्तियाँ है जबकि नानक की वाणी कोमल है। नानक की वाणी में कटूक्तियां, देखने को नहीं मिलती। नानक ने भी उस युग में व्याप्त आडंबरों तथा पापाचार का विरोध किया परंतु वाणी में कटुता न लाते हुये नम्रता से लोगों को समझाया। उन्होंने ऐसी वाणी का प्रयोग किया जो जन साधारण समझ सके। उनके सामने अनेक वि"ाम परिस्थितियाँ आयी पर फिर भी उन्होंने उसे क्राध द्वारा हल नहीं किया अपितु शाँत स्वभाव द्वारा लोगों को अपनाया। नानक ने अपनी बात को समझाने के लिये नम्र वाणी का प्रयोग किया। यहाँ पर एक उदाहरण देखिए –

सो ब्राम्हणु जो ब्रम्ह, बीमारै, आपि तरें सगले कुल तारे।

(धनासरी म. 1)

अर्थात् वही ब्राम्हण श्रेष्ठ है, जो ब्रम्ह का विचार करे। वह स्वयं तो भवसागर से पार हो जाता है। साथ ही साथ उसका कुल भी पार हो जाता है।

यहाँ पर उन्होंने कबीर की तरह ब्राम्हणों पर तीखा प्रहार नहीं किया अपितु उन्होंने ब्राम्हणों को कटू शब्द कहने की बजाय उसे उसके कत्तव्य का बोध कराया है।

इसी प्रकार –

सो ब्राम्हणु जो बिंदै ब्रम्हु।
जपु जपु संजमु कमावें करमु।।
सील संतोख का रखे धरमु।
बंधन तोड़े होवै मुकत सो ब्राम्हण पूजण जुगतु।।

(सलोक वारां ते वधीक)

नानक ने वही बात को बड़ी विनम्रता से कहा है। परंतु कबीर ने इसी बात को अपनी वाणी में शालीनता को न अपना कर ब्राम्हणों पर तीखा प्रहार किया है–

जे ब्रामन तू बामनी जाया।
और राह तू काहे न आया।।

कबीर को घृणा, उपेक्षा और दरिद्रता के बोझ ने इतना ग्रसित कर दिया था कि उनकी वाणी की कोमलता न"ट हो गयी। उन्होंने रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों के खंडन करने में अपना जीवन लगा दिया। वे शास्त्रसम्मत बात की उपेक्षा जीवनानुभव को श्रेष्ठ समझते हैं –

तू कहता कागद की लेखी मैं कहता आँखन की देखी

दूसरी और नानक का विनम्र मंतत्य है कि –

जिहो डिट्ठा तिहो किहा।

अक्खड़, उद्वण्ड, कटु, तीव्र, प्रहारक कबीर ने अपनी विद्रोहिणी प्रकृति से न केवल जन समाज का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया अपितु लागों को विचारने पर भी विवश कर दिया था। बाह्याडम्बरों एवं आवरणों का विरोध की उनकी प्रकृति को जनता ने एकदम तो नहीं अपनाया परंत उससे लोग चमत्कृत तथा सतर्क अवश्य हो गये। इसके विपरीत नानक ने समाज को वहीं संदेश विनम्रता से दिया तथा वे सफल भी रहे।

समाज में नारी की स्थिति

नानक तथा कबीर के आगमन का काल भारत की परतंत्रता के साथ–साथ स्त्रियों की परतंत्रता का काल था। स्त्रियों की सेवा भाव, समर्पण बलिदान की भावना कालान्तर में वि"ा बन गई। वह निर्दयी पुरूषों के बंधनों में जकड़ी और उपेक्षित होती रही। उनका पग–पग पर अपमान होता परंतु मूक पशु की भाँति मृत्युपर्यन्त तक सामाजिक असहनीय यातनाओं को सहती रहती। छोटी–छोटी बालिकाओं को पत्नी का स्वरूप दिया जाता था। बेमेल विवह का प्रचलन बढ़ रहा था। विधवा होने पर उसे दूसरे विवाह की अनुमति नहीं थी। वहीं दूसरी ओर पुरूषों को विवाह का अधिकार प्राप्त था। स्त्रियों का जीवन पुरूषों की दया पर था। पर्दा प्रथा, विधवाओं की हीन दशा, कन्या पक्ष का नीचा समझा जाना, उच्च शिक्षा बहिष्कार, अनमेल विवाह, उत्तराधिकार से वंचित होना आदि सामाजिक कुरीतियों ने नारी के अधिकारों को समाप्त कर दिया था। नानक ने स्त्रियों की दशा में सुधार लाने का भरसक प्रयास किया तथा लोगों को समझाया कि –

''नारी को क्यों नीचा माने ?
उसमें हम अंकुर लेते
उससे ही जनम् पाते।
नारी से रिश्ता कर हम
उससे अपना ब्याह रचाते।
प्यार उसी से हम है करते,
जाति हमारी विकसित करती
दूजी आती इक जब भरती।
हम समाज से संबंध जोड़ते।
उसे बुरा क्यों कहें –
ओछी कैसे हो जाती ?
जो राजाओं को देती जन्म।

नानक कहते है जिस नारी ने शूरवीरों, राजाओं, भक्तों, दार्शनिकों को जन्म दिया है उसका अपमान करने से बढ़कर कोई पाप नहीं। जो परमात्मा के सच्च भक्त है

वह लिंग भेद को स्वीकार नहीं करते। नानक ने ऐसे लोगों का कड़ा विरोध किया जो नारी को हीन मानकर उन्हें धार्मिक आयोजनों में सम्मिलित करने में बाधक बनते थे। उन्होंने कहा नारी मात्र पुरूषों की दासी नहीं है वह तो हमारे समाज की निर्मात्री है। उसके द्वारा ही एक सुसज्जित परिवार तथा समाज की रचना हो सकती है। अतः नारी को हमारे समाज में बराबरी का दर्जा प्रदान करो तभी एक आदर्श समाज की स्थापना हो पायेगी।

इसी क्रम में आगे कबीर का अध्ययन करने पर हमें कुछ भी ऐसे प्रमाण प्राप्त नहीं होते जिससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकें कि कबीर ने नारी को ऊँचा स्थान (दर्जा) प्रदान करने की कोशिश की या नारी को दीन–हीन अबला कहा है और न ही कोई ऐसा प्रमाण मिलता ह जहाँ पर उन्होंने नारी को तिरष्कृत किया हो। एक स्थान पर हमें यह दोहा पढ़ने में आया है –

नारी की झाईं परत अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिन की कौन गति निज जे नारी के संग।

इसी प्रकार उन्होंने नारी के वि"ाय में कहा है –

नारी तो हम भी करी, आया नहीं विचार
जब जानी तब परिहरि नारी बड़ा विकार।

परंतु यह भी प्रमाणित नहीं है। इस दोहे के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि कबीर ने नारी को निम्न माना है। तभी तो उन्होंने कहा कि नारी की परछाई मात्र से साँप अंधा हो जाता है। अतः समझा जा सकता है कि नारी की संगति कितनी बुरी है।

''गुरूनानक'', जीवन युग तथा शिक्षाएँ में डॉ. सीताराम बाहरी जी ने लिखा है कि कबीर भी स्त्रियों के प्रति बनी पुरानी धारणा का विरोध नहीं कर पाये उल्टा उन्होंने कंचन कामिनी को निंदित बताया। इसके विपरीत गुरूनानक ने स्त्रियों को समान अधिकार दिये और स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की कि उस स्त्री जाति की भर्त्सना करना अनुचित है जो राजाओं और राजयोगियों की जन्मदात्री है।

नानक के राग सूही (पृ. 762–763) में अपनी सुजज्जी रचना में नारीत्व का आदर्श प्रस्तुत किया है। एक और शब्द में उन्होंने कहा है कि उन व्यक्तियों का जीवन सार्थक और सफल है जो शक्ति तथा अर्थ संपन्न किन्तु विनम्र और निरंकार स्त्रियों के संसर्ग में रहते हैं।

नानक वाणी की इस मर्यादा ने किसी भी सिख धार्मिक या सामाजिक उत्सव में स्त्रियों के अलगाव का कोई अवसर नहीं रहने दिया। पंजाब का इतिहास इस बात का साक्षी है कि सिख स्त्री किसी भी धार्मिक सामाजिक, और यहाँ तक कि राजनैतिक आन्दोलनों में भी पुरूषों से कभी पीछे नहीं रही। इनमें से कुछ ने तो मुगलों और अंग्रेजों के विरूद्ध वीरता से लड़ने तक का भी साहस दर्शाया।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नानक तथा कबीर साहित्य का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है कि दोनों ही संत अपनी वाणी के माध्यम से मनुष्य को आदर्श जीवन पद्धति सिखाना चाहते थे। दोनों ही संतों ने भारतीय दर्शन के अद्वैतवादी सिद्धांत से प्रेरणा लेकर ईश्वर के निर्गुण रूप की परिकल्पना की और इस्लाम धर्मावलम्बियों के साथ प्रेम से रहने का परामर्ष दिया। कबीर तथा नानक ने दलित वर्ग के उत्थान के लिए अथक प्रयत्न किया और सभी जातियों को भेदभाव रहित होकर प्रेम से रहने के लिए प्रेरित किया। वर्तमान युग में इन दोनों संतो के उपदेशों की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है। भारतीय संविधान में जिस सर्व धर्म समभाव की परिकल्पना की गई उसके मूल स्त्रोत ये ही संत कवि हैं। उक्त संतों की विचारधारा को गहराई से समझने की आज भी आवश्यकता है। जिससे साहित्य और समाज को नई दिशा मिलेगी और मानव समाज मानसिक शाँति की ओर उन्मुख होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुरूनानक जीवन युग तथा शिक्षाएँ, गुरमुख निहाल सिंह, गुरूनानक फाउण्डेशन दिल्ली।
2. गुरूनानक का रूहानी उद्देश्य, जे. आर. पुरी, राधास्वामी सत्संग व्यास, अमृतसर।
3. गुरूनानक और उनका काव्य, डॉ. महीपसिंह, डॉ. नरेन्द्र मोहन नेशनल पब्लिसिंग हाउस 23, दरियागंज दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971।
4. आसा, दी वार सटीक, टीकाकार प्रो. साहिब सिंघ, ब्रदर्ज बाजार माई सेवा अमृतसर।
5. जीवन यात्रा तथा सिद्धांत गुरूनानक देव जी, कृपाल सिघ, चंदन अनुवादक स. कुलबीरसिंघ, मिशनरी कॉलेज, लुधियाना–8।
6. कबीरदास, डॉ. कान्ति कुमार जैन, दिव्य प्रकाशन, ग्वालियर।
7. संत कबीर, डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
8. कबीर ग्रंथवली, डॉ. श्याम सुंदरदास, नागरिक प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
9. कबीर, आचार्य प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. भक्त कबीर जी, भाई चतर सिंघ, जीवन सिंघ, अमृतसर।